डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

* शेष भाग →

बस्तियों की स्थापना होने लगी थी। इसके कारण कृषि एवं पशुपालन का काफी विकास हुआ। शिल्प एवं व्यवसाय की प्रगति हुई। वैसे यह बात अलग है कि उस समय धातु के हथियार नहीं बनते थे।

नवपाषाणिक संस्कृति के तत्वों में अनेक तत्व भारत में भी पाये गये हैं। यही कारण है कि भारत के भिन्न-भिन्न भाग में इस संस्कृतियों के विभिन्न स्वरूप हमें देखने को मिलते हैं। वैसे यह बात अलग है कि ताम्र पाषाणयुग में आर्थिक परिवर्तन हुए। तांबे के आविष्कार ने उत्पादन में काफी वृद्धि ला दी। यही कारण है कि भारत के विभिन्न भागों से अनेक ताम्रपाषणिक स्थल प्रकाश में आये हैं। जहाँ विकसित ग्रामीण सभ्यता के हमें साक्ष्य मिलते हैं। उस समय तांबे की खानों से तांबा प्राप्त कर उसे गलाया जाता था और उसके विभिन्न आभूषण बनाये जाते थे इतना ही नहीं बल्कि ये आभूषण भिन्न प्रदेश एवं दक्षिण भारत में भी भेजे जाते थे। ताम्रयुग के बाद विश्व स्तर पर 3000 ई० पूर्व के आसपास कांस्ययुग का प्रारम्भ हुआ। उसी युग की यह विशेषता थी कि अब ताम्र उपकरणों के स्थान पर काँसे का व्यवहार होना शुरू हुआ। उस समय मिस्त्र, मेसोपोटामिया, यूनान और सिन्धु घाटी में काँसे के उपकरण तैयार होने लगे। इसी लिए तो विद्वानों ने इस युग को कांस्ययुग के नाम से संबोधित

डॉ० अनुजा कुमारी
SNSRKS

लोहे के प्रयोग का प्रमाण साहित्यिक एवं पुरातत्विक साक्ष्यों से मिलता है। इस समय की सांस्कृति एवं अर्थ व्यवस्था वैदिक काल की तुलना में अभी व्यवस्थित है। अद्यपि इस दौरान कृषि में प्रयुक्त होने वाले नगन्य थी लेकिन फिर भी हालें, कांटे, कुल्हाड़ियाँ, कुदाल इत्यादि मिले हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है। कि अनेक स्थलों में ~~लों~~ लोहअयस्क भी मिले हैं। जिसे ~~लगता है।~~ ऐसा लगता है। कि वहाँ लोहे की ढलाई शायद होती होगी। इसी युग में चाक की सहायता से विशेष प्रकार के मिट्टी में बर्तन बनाये जाते थे। इस समय की आर्थिक व्यवस्था अत्यन्त थी। स्थाई निवास तथा शिल्प एवं व्यवसाय के प्रमाण हमें मिलते हैं। अतः हम कह सकते हैं। 1000 ई० पूर्व के आसपास भारत में लौहयुग प्रांरभ हो चुका था।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि मानव की उत्पत्ति एवं मानव सभ्यता की शुरुआत का अचानक किसी दैवी के ~~प्रभाव~~ प्राप्त प्रताप के कारण नहीं हुई बल्कि जलवायु में और भौगोलिक परिवर्तन क्रमिक विकास मानव के उद्भव को संभव बनाता यही कारण है। कि अपने बुद्धि एवं संघर्ष में परिवर्तित का सहारे लेकर पहले जीवित रहने की कला सीखी इसके बाद विभिन्न चरणों में प्रवेश करता हुआ बर्बरता की स्थिति से सभ्यता की अस्मति में क्रमबद्ध रूपेन पहुँचा आज हम सब उन्ही के संतान हैं।

THE END